International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 6; November 2017; Page No. 366-369

ह्वेनसांग के दृष्टिकोण में भारत (629 ई.–645 ई.)

सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, मदवि, रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण चीन से समय–समय पर यात्री भारत में बौद्ध धार्मिक स्थलों के दर्शन अथवा धर्मग्रन्थों के संग्रह के लिए आए। उन्होंने भारत में भ्रमण कते हुए बौद्ध धार्मिक स्थलों के अतिरिक्त यहां की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दशा का भी यदा कदा वर्णन किया है जो भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग व सुगयुंन आदि के विवरण प्रमुख है। परन्तु इनमें ह्वेनसांग का विवरण अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि उसने भारत की सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक व आर्थिक दशा का अन्य यात्रियों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट एवं प्रभावी वर्णन किया है।

मूल शब्द : वर्ण व्यवस्था, बौद्ध धर्म, प्रयुक्त, अधिकांशतः, श्रृंगार

प्रस्तावना
तागवंश के शासनकाल में जबकि भारत में हर्ष का शासन था, भारत आने वाला सर्वाधिक प्रसिद्ध यात्री ह्वेनसांग था। जिसका विवरण अन्य चीनी स्त्रोतों की अपेक्षा भारत के विषय में अधिक जानकारी देता है। उसके प्रारम्भिक जीवन के विषय में सैमुअल बिल लिखते हैं –

'उसका जन्म हो–नान प्रान्त के च–इन–लिऊ में 603 ई. में हुआ था। वह चार भाइयों में सबसे छोटा था। अपने जीवन के प्रारम्भिक समय में ही वह अपने दूसरे भाई चांग–सी के साथ पूर्वी राजधानी लॉ–याँग चला गया। उसका भाई बौद्ध भिक्षु था और ह्वेनसांग भी 13 वर्ष की आयु में भिक्षू बन गया।'[1]

भिक्षु बनने के बाद उसने भ्रमण करना प्रारम्भ किया 629 ई. में जब उसकी अवस्था लगभग 24 वर्ष की थी वह अपने दो साथियों के साथ भारत की यात्रा के लिए आया। वह यहाँ आकर बौद्ध तीर्थों का दर्शन व बौद्ध ग्रन्थों का संग्रह करना चाहता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह चीन से रवाना हुआ और तुरफान, कूचा, ताशकन्द, समरकन्द, काबुल तथा पेशावर होता हुआ भारत आया। पेशावर से तक्षशिला, कश्मीर, जालन्धर तथा मथुरा गया। मथुरा से थानेश्वर आया।

थानेश्वर से यह अहिच्छत्र तथा वहां से कान्यकुब्ज पहुंचा। तत्पश्चात् अयोध्या, प्रयाग, कौशाम्बी, श्री वास्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, वाराणसी, वैशाली की यात्रा के बाद मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पहुंचा। यहां से बौद्धगया, नालन्दा की यात्रा करते हुए वह कर्ण सुवर्ण आदि नगरों को गया। कर्ण–सुवर्ण से उड़ीसा के औड्र, कागोंद व कलिंग होते हुए दक्षिण कौशल पहुंचा। यहां से धान्यकटक व कांची पहुंचा। कांची उसकी दक्षिण यात्रा का आखिरी पड़ाव था। यहां से वह पुलेकेशियन द्वितीय के राज्य से होता हुआ कश्मीर गया। [2] कश्मीर से पाटलिपुत्र, गया व नालन्दा में कुछ माह ठहरा। नालन्दा में कामरूप के राजा भास्करवर्मन के निमन्त्रण मिलने पर वह आसाम गया। उसके आसाम में आने की सूचना पाकर हर्ष ने उसे कान्यकुब्ज बुलाया। कान्यकुब्ज आकर उसने वापसी की इच्छा जाहिर की वह हर्ष की सहायता से वापिस चल पड़ा। वह पंजाब, पेशावर, तक्षशिला होता हुआ हिन्दूकुश पार करके काशगर, यारकंद खोतान होता हुआ अपने देश की पश्चिमी राजधानी चांगअन पहुंचा।[3] वहां चीन के सम्राट ने उसे बहुत सम्मान दिया। चीनी सम्राट ने ह्वेनसांग की सेवा में लगा दिए। ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद करने के अतिरिक्त उसने अपनी यात्रा का विवरण सी–यू–की नामक शीर्षक से लिखा जिसका अर्थ है 'रिकॉर्डस् ऑफ द वैस्टर्न वर्ल्ड'। सैमुअल बील ने इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया जिसका शीर्षक था 'बुद्धिस्ट् रिकार्ड ऑफ वैस्टर्न वर्ल्ड'।

वर्ण व्यवस्था
ह्वेनसांग ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का विस्तृत वर्णन किया है तथा इन वर्णों के प्रधान कार्यों को भी इंगित किया है। उसके अनुसार समाज चार वर्णों में बंटा हुआ था।[4] इन वर्णों एवं श्रेणियों में ब्राह्मणों का सर्वाधिक सम्मानित तथा पवित्र स्थान था। जिसकी ख्याति और व्यापकता के कारण भारत को ब्राह्मण देश भी कहा जाता था।[5] ह्वेनसांग ने क्षत्रियों की कर्मनिष्ठा की भूरी–भूरी प्रशंसा की है। उसने उन्हें सीधा–सादा, पवित्र, सरल तथा मितव्ययी कहा है।[6] तीसरा वर्ण वैश्यों का था जो मुख्यतः व्यापारी थे और इस उद्देश्य के लिए दूर देशों के लिए जाते थे। यह वर्ण भी काफी सम्पन्न था। चौथा वर्ण शुद्रों का था जिन्हें ह्वेनसांग ने कृषक बताया है।

इस काल तक समाज में जातिभेद का बीजारोपण हो चुका था। चीनी यात्री लिखता है कि कसाई, मछुआ, जल्लाद, चाण्डाल आदि लोगों की बस्तियां सवर्ण हिन्दुओं की बस्ती से अलग रहती थी और इस प्रकार बसाई जाती थी कि लोग उसे पहचान लें। जब वे लोग राह चलते थे तो भयभीत अवस्था में सड़के के बायी तरफ चलते थे। इस बात की पुष्टि बाण के कादम्बरी से भी होती है। वह लिखता है कि जब चाण्डाल कन्या राजा के दरबार में गयी तब वह राजा का ध्यान आकर्षित करने के लिए लकड़ी की आवाज करती जाती थी।[7] बाण लिखता है कि शुद्र कन्या अस्पृष्य थी।

ह्वेनसांग के अनुसार परस्पर वैवाहिक सम्बन्धों के कारण मिश्रित जातियों का समाज में स्तर क्रम उच्च अथवा निम्न होता रहता था, लेकिन समाज में शुद्रों की दशा संतोषजनक थी, क्योंकि उन्हें तीनों वर्णों के सेवक की बजाय कृषक कहा है। उसने मतिपुर के शासक का उल्लेख करते हुए उसे शुद्र बताया है। उसके इस विवरण से शुद्रों की अच्छी स्थिति का ज्ञान होता है।

स्त्रियों की दशा एवं विवाह

ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि समाज में स्त्रियों का सम्मानीय स्थान था। लेकिन मूलस्थानपुर (मुल्तान) के सूर्य मदिर के भ्रमण के समय अनेक स्त्रियों को देखा था। वह लिखता है – "यहां पर एक मन्दिर है, जो सूर्य देवता को समर्पित है। यह बहुत आकर्षित और सुसज्जित है। यहां पर सूर्य देवता की मूर्ति स्थापित है जो पीले रंग की है और दुलर्भ रत्नों के साथ श्वेत युक्त है। महिलाएं अपने संगीत को इससे प्रकाश देती हैं और इसके सम्मान में फूलों और इत्र को चढ़ाती हैं।" उसका यह वर्णन पश्चिमोत्तर भारत में स्थित देवदासी प्रथा का आभास देता है।

विवाह दो प्रकार के थे अनुलोम व प्रतिलोम। विवाह में दहेज प्रथा थी। चीनी यात्री इस संबंध में मौन है परन्तु बाण संकेत करता है कि वैवाहिक अवसरों पर बहुत अधिक दहेज दिया जाता था। सम्राट हर्ष की बहन राजश्री के विवाह के अवसर पर बहुत अधिक दहेज दिया गया तथा समाज में सति प्रथा थी प्रचलित थी। ह्वेनसांग के अनुसार भारत में निकट सम्बन्धों में विवाह वर्जित थे। विधवा स्त्री पुनः विवाह नहीं कर सकती थी।[8]

दास–दासियों को समान दृष्टि से नहीं देखा जाता था। विदूषक दासियों को अधिक सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते थे।[9]

मृतक संस्कार

ह्वेनसांग ने भारत में मृतक संस्कार की विभिन्न पद्धतियों का उल्लेख किया है। भारत में मृतक संस्कार की तीन पद्धतियां थीं – शव को जलाना, पानी में बहाना, जंगल में हिंसक पशुओं के आहार के लिए फैंकना।[10]

उसके अनुसार मृतक संस्कार के अवसर पर रोना–पीटना होता था। शव के साथ चलने वाले लोग बाल खुले रखते थे और अपने कपड़े रोते–पीटते फाड़ डालते थे भारत में किसी प्रकार का शोकवस्त्र पहनने की प्रथा नहीं थी। व्यक्ति के मरने पर उस घर में भोजन तब तक निषिद्ध रहता था, जब तक मृतक संस्कार नहीं होता था। मृतक संस्कार के पश्चात् नगर के बाहर स्नान करके ही अपने घरों को जाते थे।

खान–पान व रहन–सहन

ह्वेनसांग के अनुसार लोगों का भोजन सादा था। उनके खान–पान में दूध, मक्खन, घी, दानेदार चीनी, रोटी का प्रयोग होता था।[11] जन साधारण प्याज, लहसुन, शराब, मांस आदि को छूना पाप समझते थे। केवल नीच लोग ही इसका सेवन करते थे। मांस खाने वालों को अछूत समझा जाता था।

ह्वेनसांग ने भारतीयों की स्वच्छता सम्बन्धी मान्यताओं का वर्णन किया है। उसके अनुसार भारतीय भोजन से पूर्व नहाते थे। एक बार परोसी गई वस्तु को पुनः नहीं परोसते थे। भोजन में प्रयुक्त लकड़ी व मिट्टी के पात्र एक बार प्रयोग के बाद फेंक दिये जाते थे। लेकिन सोने चांदी, तांबा एवं लोहे आदि के पात्रों को भली प्रकार से साफ किया जाता था।[12] भोजन के बाद दातों को भली प्रकार से साफ किया जाता था।

ह्वेनसांग के अनुसार भारत में अधिकांशतः लोग श्वेत वस्त्र पहनते थे। जबकि रंगीन वस्त्रों में लाल रंग के वस्त्र अधिक पहने जाते थे। ह्वेनसांग ने अनेक प्रकार के रेशमी तथा सूती वस्त्रों का उल्लेख किया है। जैसे कौशेय तथा क्षोभ के रेशों से बना हुआ कपड़ा होता था।[13] स्त्रियां अपने शरीर को एक लम्बी सी धोती से ढकती थी। पुरुष धोती पहनते थे और कन्धे पर एक चादर सी पहनते थे। लोग अंगूठियां, हार कंगन, माला आदि आभूषणों से शरीर को सजाते थे। स्त्रियां कई प्रकार शृंगार करती थी। मोरपंख, लाली, काजल, सीपी आदि शृंगार के विविध प्रसाधन थे। स्त्रियां अपने बालों को बड़ी दक्षता से संवारती थी। केशो का जूड़ा बांधने का रिवाज था।

भवन एवं नगर

ह्वेनसांग लिखता है कि उस समय भारत में अनेक गगनचुम्बी भवन थे और राजमार्ग विस्तृत थे। नगरों और गावों में ईंटों की मोटी तथा ऊंची दीवारें बनी होती थी। कमरों की छते प्रायः लकड़ी की बनाई जाती थी और उन पर चूने का प्लास्टर किया जाता था। किन्तु मकान का शेष भाग ईंटों से बनाया जाता था। शुद्धता के लिए मकानों के आंगन तथा दीवारों को गोबर से लेप दिया जाता था। दीवारों पर सुन्दर–सुन्दर चित्र भी बनाये जाते थे। और उन्हें खूब सजाया जाता था। उनके चार कोनों पर चार बुर्ज बने होते थे। विहारों के ऊपर उठे हुए भागों पर मूर्तियां उत्कीर्ण की जाती थी।

ह्वेनसांग द्वारा वर्णित भारतीय नगरों एवं स्थलों की एक दूसरे से दूरी एवं दिशा के आधार पर कर्नानधम ने अधिकांश खण्डर हो चुके पुरास्थलों को खोजा। भारतीय पुरातत्व के इतिहास में ह्वेनसांग के ये विवरण महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं।[14]

शिक्षा व्यवस्था

ह्वेनसांग के अनुसार विहार और मठों में बौद्ध धर्म की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती थी। ब्राह्मणों को वैदिक यज्ञों के अनुष्ठान और वेद पाठों की शिक्षा दी जाती थी। ब्राह्मण, छात्रों को दर्शन व तर्कशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। तक्षशिला, उज्जैन, गया तथा नालन्दा विश्वविद्यालय शिक्षा के बड़े केन्द्र थे। ह्वेनसांग के भ्रमण के समय उपरोक्त शिक्षा केन्द्रों के साथ–साथ राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, कश्मीर, जालन्धर, मतिपुर, कान्यकुब्ज आदि के बौद्ध विहार बौद्ध शिक्षा केन्द्रों के लिए प्रसिद्ध थे। बौद्ध शिक्षण संस्थानों की सम्पूर्ण व्यवस्था बौद्ध भिक्षुओं के हाथ में रहती थी।[15] चाहे वह छोटा बौद्ध संघ हो या बड़ा। इन विश्वविद्यालयों का प्रबन्ध किसी विशिष्ट विद्वान के निर्देशन में होता था जो संघ के सदस्यों के मतों से भिक्षुओं में से चुना जाता था। ऐसा प्रबन्धक अपने ज्ञान और विद्वता में अग्रणी होता था। नालन्दा विश्वविद्यालय जो पहले बौद्ध संघ था, कालान्तर में विश्वविद्यालय शिक्षण संस्था के रूप में ख्यात हुआ।

ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय में दो वर्ष का समय व्यतीत किया। उसके समय में इस विश्वविद्यालय में छः मंजिले थीं। इसमें ज्योतिष, चिकित्सा, तर्कशास्त्र, विज्ञान, व्याकरण तथा दर्शन आदि विषयों की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा संस्थान में प्रवेश के इच्छुक को सबसे पहले द्वारपाल से वाद–विवाद करना पड़ता था। उसके प्रश्नों से 8–10 विद्यार्थी असफल होते थे और 1–2 सफल।[16] ह्वेनसांग के समय यहां विद्यार्थियों की संख्या 10,000 थी और शिक्षकों की संख्या 1510 थी।[17] विश्वविद्यालय का कुलपति शीलभद्र था जो अनेक विषयों में पारंगत था। ह्वेनसांग ने यहां अध्यापन का कार्य भी किया।

धार्मिक दशा

हर्ष के शासनकाल में ही ह्वेनसांग ने भारत भ्रमण किया। ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष के समय में बौद्ध धर्म पतन की ओर बढ़ रहा था। अब उसकी केवल दो शाखायें हीनयान और महायान ही नहीं थी वरन यह धर्म 18 सम्प्रदायों में विभक्त हो चुका था, जिनमें प्रमुख थे स्थविरवाद, सम्मतीयवाद, र्स्वास्तिवाद, महासंघिक, हीनयान, महायान[18] आदि। हीनयान–महायान अब भी बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखाएं थीं। इनमें भी महायान शाखा अधिक लोकप्रिय तथा विकसित थी। हर्ष स्वयं महायान शाखा का अनुयायी थी। हिन्दू धर्म

की भांति बौद्ध धर्म में भी मूर्ति पूजा प्रचलित थी। हर्ष भी बुद्ध को अवतार मानकर उनकी मूर्ति की पूजा बड़ी श्रद्धा व आस्था से करता था। किन्तु उस समय गया तथा कपिलवस्तु आदि बौद्धों के पवित्र स्थान वीरान हो गए थे। ह्वेनसांग ने यह भी कहा है कि फिर भी देश के बहुत से भागों में बहुत से मठ थे, जहां हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षु रहते थे। ह्वेनसांग ने 639 ई. में कई महीने अमरावती में व्यतीत किये और बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया।[19]

हर्ष का शासन दक्षिणी पंजाब, पूर्वी राजस्थान, कन्नौज प्रायः सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश, मगध का कुछ भाग, बिहार तथा बंगाल के कुछ क्षेत्रों तक विस्तृत था। ह्वेनसांग के विवरणों से चालुक्य शासक पुलकेशियन द्वितीय द्वारा हर्ष की अधीनता से इन्कार करने का उल्लेख मिलता है।[20]

शासन व्यवस्था

ह्वेनसांग ने अपने विवरण में राज्यों के शासन प्रबन्ध पर भी प्रकाश डाला है परन्तु उसके विवरणों में हर्ष के शासन प्रबन्ध का अधिक उल्लेख है –

उसके अनुसार साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी सम्राट था। उसे सम्राट, महाराजधिराज, एकाधिराज, परम भट्टारक, चक्रवर्ती, सार्वभौम, परमेश्वर आदि नामों से जाना जाता था। पृथ्वी पर वह देव स्वरूप माना जाता है। कर्मचारियों एवं अनुचरों से घिरा सम्राट एक भव्य राजप्रसाद में रहता था। ह्वेनसांग के अनुसार भारत में शासन के सिद्धान्त उदार थे।

ह्वेनसांग के कथनानुसार हर्ष का सम्पूर्ण दिन तीन भागों में विभक्त रहता था। एक भाग प्रशासन सम्बन्धी कार्यों में व्यतीत करता था और शेष दो भाग धार्मिक कार्यों में।[21] वह कार्य करते हुए कभी नहीं थकता था उसके लिए दिन बहुत छोटा था।

सम्राट की सहायता के लिए मन्त्रीपरिषद होती थी। संभवतः भण्डी इसका प्रधानमंत्री था। हर्षकालीन अन्य पदाधिकारियों के भी पद और नाम मिलते हैं। अवन्ति उसका युद्ध मंत्री था। सिंहनाद उसकी गजसेना का नायक था और कुन्तल अश्वरोही दल का नायक था ह्वेनसांग के विवरणों से ज्ञात होता है कि साधारणतः पदाधिकारियों को नकद वेतन नहीं मिलता था उन्हें भूमिखण्ड दिए जाते थे।[22]

सैनिक व्यवसाय पैतृक बन गया था। सेना के प्रमुख चार अंग होते थे पैदल, घुड़सवार रथ और हाथी। ह्वेनसांग ने हर्ष की सैनिक शक्ति का भी उल्लेख किया है। उसके अनुसार हर्ष के पास साठ हजार गजारोही, एक लाख अश्वारोही तथा पचास हजार पैदल सैनिक थे। इसी प्रकार उसने पुलकेशियन द्वितीय की सैनिक शक्ति की भी प्रशंसा की है।

न्यायिक संगठन

निःसन्देह न्यायिक प्रबन्ध राजा का प्रमुख कार्य होता है। जनसाधारण राज्य के अस्तित्व और स्थिरता को तभी स्वीकार करते हैं जब वह उसके न्यायालयों और उस द्वारा दिए गए निर्णयों की सशक्तता देखें। ह्वेनसांग के अनुसार प्रशासन का कार्य ईमानदारी से होता था। फौजदारी के कानून कठोर थे। राजद्रोह के लिए कारावास का दण्ड दिया जाता था, मृत्युदण्ड नहीं। सामाजिक अनाचार, विश्वासघात और माता–पिता प्रति दुर्व्यवहार के अपराध में अंगछेदन अथवा निर्वासन का दण्ड दिया जाता था। अपनी निरापराधता सिद्ध करने के लिए अभियुक्त को जल परीक्षा, अग्नि परीक्षा, तुला परीक्षा व विष परीक्षा भी देनी पड़ती थी।[23] साधारण अपराधों के लिए जुर्माने का दण्ड था। फिर भी प्रशासन उदार और नम्र था। दण्ड कठोर होने के बाद भी मार्ग सुरक्षित नहीं थे। ह्वेनसांग को दो बार लूटा गया था।

आर्थिक दशा

ह्वेनसांग ने लिखा है कि देश में सम्पूर्ण शान्ति थी अतःलोगों की आर्थिक दशा अच्छी थी। देश धनधान्य से पूर्ण था और लोग बड़े खुशहाल थे। आय का मुख्य स्त्रोत भूमिकर था। जो एक बटा छह भाग लिया जाता था। ह्वेनसांग के अनुसार कर बहुत कम था, बेगार नहीं ली जाती थी। ह्वेनसांग के अनुसर राज्य की आय को चार भागों में बांटा गया था। एक भाग राज्य कार्य चलाने के लिए, दूसरा भाग मंत्रियों तथा अन्य राज्य कर्मचारियों के देन–देन के लिए, तीसरा सुयोग्य व्यक्तियों को पुरस्कृत करने के लिए, चौथा धार्मिक सम्प्रदायों को दान देने के लिए।

लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। नदियों के किनारे जहां सिंचाई की अवस्था थी, भारी उपज होती थी। देश के विभिन्न भागों में सिंचाई के कृत्रिम साधनों का विकास करके अनाज, चारा, फल तथा सब्जियां पैदा की जाती थी। ह्वेनसांग ने भारत में होने वाले फलों के नाम भी बताए हैं। जैसे आंवला, मधुक, भद्र, कपित्थ आदि।

व्यापार काफी उन्नत था। बाजार में विभिन्न स्थानों के व्यापारी आकर एकत्र होते थे। अनेक पशु विक्रय हेतु नगरों में लाए जाते थे। ह्वेनसांग के अनुसार नगर में सड़कों के दोनों और दुकाने रहती थी, जहां लोग अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुओं की खरीद व बिक्री करते थे। विनिमय का मुख्य साधन वस्तुओं का आदान प्रदान था किन्तु सोने चांदी की मुद्राएं भी प्रचलित थी।

इसके अलावा ह्वेनसांग ने कन्नौज के धार्मिक सम्मेलन व हर्ष की प्रयाग सभा के बारे में प्रकाश डाला है।

सन् 643 ई. में सम्राट हर्ष ने अपनी राजधानी कन्नौज में एक धार्मिक सम्मेलन बुलवाया। उस समय चीनी यात्री तथा बौद्धधर्म का विद्वान भारत में था। इस सम्मेलीन में 18 राजाओं, 3 हजार महायान तथा हीनयान भिक्षुओं, 3 हजार ब्राह्मणों व निर्गन्थों तथा एक हजार नालन्दा के विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में बौद्धधर्म के महायान सम्प्रदाय का प्रचार हुआ। इस सम्मेलन में 18 दिन तक चीनी विद्वान का निर्विरोध भाषण होता रहा।

ह्वेनसांग के समय में हर्ष ने प्रयाग की एक सभा का आयोजन किया। यह सभा गत 30 वर्षों से हर पांचवें वर्ष होती चली आ रही थी। 643 ई. में उसने ऐसा छठा अधिवेशन बुलाया। इस अधिवेशन में पांच लाख विद्वानों, महात्माओं, धर्म जिज्ञासुओं तथा यात्रियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में पहले दिन महात्माबुद्ध की, दूसरे दिन सूर्य की, तीसरे दिन शिव की पूजा की गई। ह्वेनसांग लिखता है कि हर्ष ने अपनी पांच वर्ष की सम्पत्ति इस सम्मेलन में दान में दे दी।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि ह्वेनसांग ने हर्ष के समय की सामाजिक दशा जिसके अन्तर्गत, वर्णव्यवस्था, स्त्रियों की दशा, मृतक संस्कार, खान–पान, रहन–सहन इत्यादि, इसके अलावा यहां के नगरों के बारे में भवन निर्माण कला के बारे में प्रकाश डाला है। ह्वेनसांग ने उस समय की शिक्षा व्यवस्था के बारे में प्रकाश डाला है। उसने नालन्दा विश्वविद्यालय के बारे में भी विस्तृत प्रकाश डाला है, क्योंकि उसने नालन्दा विश्वविलय में स्वयं शिक्षा ग्रहण की थी। ह्वेनसांग ने यहां की धार्मिक दशा, राजा हर्ष को धर्म तथा बौद्ध सम्प्रदायों के विभाजन पर भी प्रकाश डाला है। इसके साथ ही ह्वेनसांग हर्ष के शासन प्रबन्ध के बारे में प्रकाश डालते हुए सम्राट के कार्य, मन्त्रि परिषद्, मन्त्रियों के कार्य, सैनिक संगठन, न्यायिक प्रबन्ध इसके साथ ही यहां की आर्थिक दशा के अन्तर्गत यहां की कृषि, उद्योग–धन्धों के बारे में भी विस्तृत रूप से

प्रकाश डाला है। हालांकि ह्वेनसांग के विवरण में काफी कमियां भी है क्योंकि वह यहां की व्यवस्था से भली–भांति परिचित नहीं था और कुछ समय के लिए ही भारत में रहा था। फिर भी उस समय के इतिहास को जानने के लिए उसका विवरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ

1. एस. बील, दी लाईफ ऑफ ह्वेनसांग, पृ. 28
2. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ. 496
3. एस. बील, पूर्वोक्त, पृ. 18
4. एस. बील., बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ दी वेस्ट्रन वर्ल्ड, पृ. 82
5. थाम्स वाटर्स, युवान च्वांग ट्रेवल्स इन इण्डिया, पृ. 168
6. द्विजेन्द्र नारायण झा कृष्ण मोहन माजली, प्राचीन भारत का इतिहास, पृ. 304
7. कादम्बरी, पृ. 120
8. थाम्स वाटर्स, युवान च्वांग ट्रेवल्स इन इण्डिया, खण्ड–2, पृ. 168
9. नागानन्द, तृतीय अंक, श्लोक 4 से पूर्व
10. एस. बील, पूर्वोक्त, खण्ड–1, पृ. 86
11. वही, पृ. 88
12. थाम्स वाटर्स, पूर्वोक्त, पृ. 152
13. द्विजेन्द्र नारायण झा कृष्ण मोहन श्री माली, प्राचीन भारत का इतिहास, पृ. 390
14. कनिघम आर्कीयालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्टस (सम्बन्धित)
15. एस. बील, पूर्वोक्त, पृ. 71
16. एस. बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑफ दी वेस्ट्रन वर्ल्ड पृ. 74–79
17. थामस वाटर्स, पूर्वोक्त, पृ. 165
18. एस. बील, पूर्वोक्त, पृ. 112
19. कनिंघम आर्कीयालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिर्पोटस (सम्बन्धित)
20. डी.सी. सरकार, स्लैक्टि इन्सक्रिप्शन, पृ. 444
21. एस. बील, पूर्वोक्त, पृ. 215
22. थामस वाटर्स, पूर्वोक्त, पृ. 343
23. वही, पृ. 172
24. एस.बील, खण्ड द्वितीय, पूर्वोक्त, पृ. 205